'विराट गुरुकुल सम्मेलन'

केन्द्रीय कार्यालय:- शेषाद्रि सदन, तुलसीबाग रोड, महाल, नागपुर-440032 अणुडाक : bsmbharat1@gmail.com दूरभाष क्र.+91 7999113614, 0712-2721322

प्रति,

विषय : विराट गुरुकुल सम्मेलन हेतु निमंत्रण।

सादर नमस्कार।

भारतीय शिक्षण मंडल के शिक्षा के क्षेत्र में काम करनेवाला स्वयंसेवी संगठन है। शिक्षा की नीति, पाठ्यक्रम तथा पद्धति में भारतीयता को प्रकट करने हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन मंडल करता है। अनुसंधान, प्रबोधन, प्रशिक्षण, प्रकाशन तथा संगठन ऐसी पंचआयामी कार्यप्रणाली में मंडल कार्यरत है। मंडल के गुरुकुल प्रकल्प का यहां विशेष उल्लेख किया जा रहा है। इस प्रकल्प का उद्देश्य है गुरुकुल शिक्षा को युगानुकुल रूप में पुनः समाज में प्रस्थापित करना ततथा यह करते हुए गुरुकुल शिक्षा को एक बार फिर मुख्यधारा की शिक्षा बनाना।

इस प्रकल्प के अंतर्गत २८ से ३० अप्रैल २०१८ (बुद्ध पूर्णिमा)को उज्जैन के महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान में विराट गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में अब नेपाल, भूटान आदि विभिन्न देशों के गुरुकुलोंने भी सम्मिलित होने की अभिलाषा व्यक्त की है जिससे इसका स्वरूप अब अन्तरराष्ट्रीय स्तर का हो गया है। ऐसा विशेष ततथा भव्य-दिव्य सम्मेलन अपने भारत में आयोजित होने जा रहा है यह हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है। इस सम्मेलन में परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ.मोहन जी भागवत उद्घाटन करेंगे तथा सरकार्यवाह मा.भैय्याजी जोशी पूर्ण समय उपस्थित रहेंगे। साथ ही संरक्षक शिक्षामंत्री, भारत सरकार मा.श्री प्रकाश जावडेकर एवं मुख्य निमंत्रक प.पू. स्वामी गोविन्ददेवगिरी महाराज है।

गुरुकुल व्यवस्था को समाज में पुनः स्थापित करने का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे शिक्षा का ह्रास रोका जा सकता है जो आज की महत् आवश्यकता है। सम्मेलन में होनेवाले सत्र एवं गतिविधियाँ सामायिक विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों की पाठ्यचर्या एवं पद्धति में सम्मिलित करने हेतु मार्गदर्शक हो सकते हैं। ऐसे अद्वितीय आयोजनमें शिक्षाविदों की बृहद उपस्थिति अपेक्षित एवं प्रार्थनीय है। अतः आपको हृदयपूर्वक इस सम्मेलन में निमंत्रित करता हूँ। आशा है आप सहभागी होकर इस महत्कार्य में बड़ा योगदान देंगे।

आपका,
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
संरक्षक, विराट गुरुकुल सम्मेलन

: आयोजक :

भारतीय शिक्षण मंडल,
गुरुकुल प्रकल्प

महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान,
उज्जैन

संस्कृति विभाग,
मध्य प्रदेश सरकार

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

VC Office <vcoffice@unishivaji.ac.in>

Invitation for Virat Gurukul Sammelan (VGS) 2018
1 message

Bharatiya Shikshan Mandal <bsmbharat1@gmail.com> Sat, Apr 14, 2018 at 2:13 PM
Reply-To: bsmbharat1@gmail.com
To: vcoffice@unishivaji.ac.in

भारतीय शिक्षण मंडल

✉ शेषाद्रि सदन, तुलसीबाग रोड, महाल, नागपुर (महाराष्ट्र)-४४००३२
✆ ०७१२-२७२१३२२ @ bsmbharat1@gmail.com 🌐 www.bsmbharat.org

केंद्रीय कार्यालय/अप्रैल18
अप्रैल 2018

दि. 14

प्रति,

प्रो. डॉ. देवानंद शिंदे

कुलपति,

शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर

आदरणीय भगिनी/बंधुवर,
सादर वन्दे मातरम्।

एक विशेष आग्रह के साथ यह निमंत्रण भेज रहा हूँ। उज्जैन के महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान में २८ से ३० अप्रैल २०१८ को एक भव्य विराट गुरुकुल सम्मेलन (वि.गु.सं) का आयोजन होने जा रहा है। वि.गु.सं की विस्तृत जानकारी तथा मध्य प्रदेश के मा. मुख्यमंत्री श्री. शिवराज सिंह चौहान की ओर से निमंत्रण पत्र संलग्न है।

वि.गु.सं हेतु भारत के १२०० से अधिक गुरुकुलों से संपर्क हुआ है। उसके अलावा नेपाल, भूटान, श्रीलंका आदि देशों से भी गुरुकुल के प्रतिनिधि सम्मिलित होने की संभावना है। भारतीय शिक्षण मंडल का विश्वास है कि इस सम्मेलन से गुरुकुल शिक्षा को युगानुकूल रूप में सुप्रतिष्ठित करने का महान लक्ष्य संपन्न हो।

गुरुकुल शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण आयाम, विशेष रूप से शिक्षणविधि (pedagogy) आधुनिक शिक्षा हेतु अत्यंत उपयोगी है। इस दृष्टि से आप की वि.गु.सं में उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। गुरुकुलों की प्रस्तुतियों का अवलोकन करने के साथ ही शिक्षाविदों के चर्चा सत्र में इस विषय पर सार्थक योगदान आप से अपेक्षित है।

आपसे व्यक्तिगत रूप से अनुरोध है कि:

१. आप स्वयं २८ से ३० अप्रैल तक, पूरा समय निकालकर इस सम्मेलन में हमारे साथ सहभागी हों। विशिष्ट पंजीयन की कड़ी http://conferencebsm.com/vip_reg.aspx में जाकर पंजीयन करें।

२. आपके विश्वविद्यालय से कुछ प्राध्यापकों एवं शोधकर्ताओं को पंजीयन हेतु प्रेरित करें। पंजीयन की कड़ी है – http://conferencebsm.com/registration.aspx.

३. आप इस भव्य आयोजन के शैक्षिक भागीदार (academic partner) बन सकते हैं। सामान्य एवं स्वर्ण भागीदारी दो प्रकार हैं। इस विषय में आपको रुचि होने पर आप हमारे संपर्क अधिकारी श्री. देवेन्द्र पंवार को संपर्क कर सकते हैं। दूरभाष: 8890223366 अनुडाक: devendrapanwar21@gmail.com

आपका बंधुवत,
मुकुल कानिटकर

Bharatiya Shikshan Mandal
'Sheshadri Sadan', Behind Gujar Bada,
Tulsibag Road, Mahal,
Nagpur-440032.
Contact : 0712-2721322

2 attachments

VGS_VC Invite_CM.pdf

सहयोगी संस्था

वेद विज्ञान गुरुकुलम्, बंगलुरु
हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला, साबरमती
प्रबोधिनी गुरुकुलम्, हरिहरपुर, कर्नाटक
मैत्रेयी गुरुकुलम्, मंगलुर, कर्नाटक
सिद्धगिरि ज्ञानपीठ, कणेरी, महाराष्ट्र
श्री आदिनाथ संस्कार विद्यापीठ (गुरुकुल), चेन्नई
श्री वीर लोकाशाह संस्कृत ज्ञानपीठ, जोधपुर, राजस्थान
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे
महर्षियाज्ञवल्क्यज्ञानपीठ, अहमदाबाद, गुजरात

नेपाल

महेश संस्कृत गुरुकुल विद्यापीठम्, तनहूँ
संस्कृत विद्याश्रम, शांतिनगर, भैरहवा
दुर्गा संस्कृत वैदिक विद्यापीठ, टिकुलीगढ
कांतिभैरव गुरुकुल विद्यालय उत्तरवाहिनी, काठमांडू
महर्षि गुरुकुल वेद विद्याश्रम, नारायणस्थान, पोखरा
कालीगण्डकी ज्ञानविज्ञान प्रतिष्ठान, स्याङ्जा

: संरक्षक :

माननीय श्री प्रकाश जावडेकर
मानव संसाधन विकास मंत्री,
भारत सरकार

माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री,
मध्य प्रदेश

: सह संरक्षक :

श्री सुरेन्द्र पटवा
राज्य मंत्री, संस्कृति विभाग

श्री जयभान सिंह पवैय्या
मंत्री, उच्च शिक्षा

श्री कुंवर विजय शाह
मंत्री, स्कूल शिक्षा

श्री दीपक जोशी
राज्य मंत्री, तकनिकी शिक्षा एवं कौशल विकास

: प्रमुख निमंत्रक :

स्वामी गोविन्ददेव गिरि महाराज
संस्थापक, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान,पुणे

: आयोजन समिति :

आचार्य डॉ. रामचंद्र भट्ट
+91-7760118401

श्रीमती अरुणा सारस्वत
+91-9425917288

डॉ. रवीन्द्र मुले
+91-9860941006

आचार्य डॉ. दीपक कोईराला
+91-9727031311

आचार्य महाबलेश्वर भट्ट
+91-9480404552

आचार्य विरूपाक्ष जड्डीपाल
+91-9440002813

श्री. मनोज श्रीवास्तव
+91-8602634772

आचार्य डॉ. गुरुप्रसाद सुवेदी (नेपाल)
+977-9855085278

श्री. दीनानाथ बंजाडे (ब्रम्हदेश)
+95-9260906015

आचार्य माधवप्रसाद अधिकारी (भूटान)
+975-17822426

: पत्राचार संकेत :

भारतीय शिक्षण मंडल

गुजरात कार्यालय
A-102, देव प्रयाग,
शान्ति जूनियर्स स्कूल के सामने,
मोटेरा–भाट लिंक रोड,
कोटेश्वर मोटेरा, अहमदाबाद–380 005
अणुडाक : mygyanpeeth@gmail.com
दूरभाष क्र. : +91 9727035355

केन्द्रीय कार्यालय
शेषाद्रि सदन,
तुलसीबाग रोड,
महाल,
नागपुर–440032
अणुडाक : bsmbharat1@gmail.com
दूरभाष क्र.+91 7999113614, 0712-2721322

'विराट गुरुकुल सम्मेलन'

स्थान : महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान उज्जैन

तिथि : वैशाख शु. त्रयोदशी, चतुर्दशी, बुद्धपूर्णिमा,
कृष्णप्रतिपदा–द्वितीया संवत् 2078 युगाब्द 5120
(28-29-30 अप्रैल 2018)

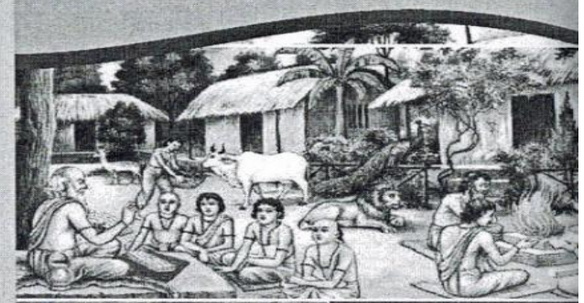

: आयोजक :

भारतीय शिक्षण मंडल,
गुरुकुल प्रकल्प

संस्कृति विभाग,
मध्य प्रदेश सरकार

महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान,
उज्जैन

गुरुकुल महिमा

अनादी काल से ही भारतीय शिक्षापद्धति पाठशालाओं और गुरुकुलों के कारण विश्वविख्यात रही है । अनेक देशों से ज्ञानार्थी छात्र विद्या ग्रहण करने के लिए भारत में आते रहे हैं । नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी, विक्रमशिला ये सुविख्यात गुरुकुल अत्यंत विराट स्वरुप में कार्य करते थे । यहाँ छात्रों की संख्या सहस्त्रों में थी और आचार्य भी बड़ी संख्या में थे । वैदिक सनातन परंपरा के साथ ही बौद्ध तथा जैन आदि भारतीय मूल के मतों में भी गुरुकुलों का प्रचलन रहा है । 11 वी - 12 वी शताब्दी में ध्वस्त किये गए नालंदा व तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय उन दिनों बौद्ध मत का ही परिपालन करते थे ।

इस बात के प्रमाण हैं कि सन 1823 तक देश के प्रत्येक ग्राम में बड़ी संख्या में पाठशालाओं के द्वारा समाज के सभी वर्गों को जीवनोपयोगी शिक्षा उपलब्ध कराई जाती रही है । साथ ही उन्नत शिक्षा हेतु आवासीय गुरुकुलों की व्यवस्था भी प्रचलित रही है । गृह-गुरुकुलों के माध्यम से भी ज्ञान परंपरा सदैव अक्षुण्ण रखी गई ।

आवासीय व्यवस्था, समग्र शिक्षा तथा अनुभूतिजन्य प्रायोगिक प्राविधि ये कुछ विशेषताएं हैं जो गुरुकुल शिक्षा को आज भी प्रासंगिक बनाती है । साक्षात्कारी आचार्यों के सत्संग में रहकर विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हैं । वेद, आगम, शास्त्र, दर्शन आदि के साथ ही निसर्ग विज्ञान, आयुर्वेद, शिल्प आदि का उन्नत शिक्षण गुरुकुलों में दिया जाता रहा है । आज की शब्दावली में ये केवल शिक्षा केंद्र ही नहीं अपितु अत्यंत प्रभावी अनुसंधान केंद्र भी थे । 1835 के बाद अंग्रेजों द्वारा थोपी हुई शिक्षा का सर्वत्र बोलबाला हुआ ।

भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि इस संघर्ष एवं राजनैतिक उथलपुथल के मध्य भी ज्ञानार्जन की वैज्ञानिक विधि पाठशाला एवं गुरुकुल को हमने जीवित रखा । भले ही लोकप्रियता न्यूनाधिक रही हो किन्तु हमारी पारंपारिक व्यवस्था पूर्णरूपेण कभी भी समाप्त नहीं हुई । बड़े-बड़े संस्थागत गुरुकुलों का संचालन जब अत्यंत दुष्कर एवं असंभव हो गया तब गृह-गुरुकुलों की परंपरा विकसित हुई । विद्वान आचार्य अपने घरों में ही छात्रों के सम्पूर्ण योगक्षेम की व्यवस्था करते हुए वेद शास्त्र आदि का ज्ञान संपादित करते रहे ।

समय-समय पर श्रीमत शंकरदेव के सत्र, रामानुजादि संप्रदाय, आर्य समाज आदि धार्मिक, आध्यात्मिक आंदोलनों ने विभिन्न रूपों में गुरुकुलों को पुनर्जीवित एवं प्रस्थापित किया । वर्तमान में भी पूरे देश में अनुमानतः एक सहस्त्र से अधिक गुरुकुल संचालित हो रहे हैं ।

सम्मेलन का उद्देश

भारतीय शिक्षण मंडल शिक्षा के भारतीय प्रारूप को पुर्नप्रस्थापित करने का कार्य कर रहा है । इस दृष्टि से गुरुकुल शिक्षा को युगानुकूल रूप में फिर एक बार समाज में प्रचलित करने का विनम्र प्रयास किया जा रहा है । संगठित प्रयास से गुरुकुल शिक्षा फिर एक बार मुख्यधारा की शिक्षा बन सकती है । वर्तमान में प्रचलित आधुनिक शिक्षा पद्धति से समाज त्रस्त हुआ है । गलाकाट प्रतिस्पर्धा और केवल स्मृति पर आधारित शिक्षण पद्धति के कारण एक ओर जहाँ छात्रों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा है वही दूसरी ओर शिक्षा का व्यापारीकरण भी प्रचंड गति से हो रहा है । इन दोनों बातों से त्रस्त अभिभावक (माता-पिता) समुचित विकल्प खोज रहे हैं । हजारों की संख्या में अभिभावकों ने गृह-विद्यालय (Home Schooling) को अपनाया है । कुछ लोग इसे विद्यालय परिष्कार (De-Schooling) भी कहते हैं । अभिभावक बच्चों को विद्यालय से निकालकर घरों में ही पढ़ा रहे हैं । अध्ययन के साथ ही अन्य कलाओं आदि की कक्षाएं भी उपलब्ध कराते हैं ताकि बालकों का सर्वांगीण विकास हो सके । इन अभिभावकों को यदि युगानुकूल गुरुकुलों का विकल्प उपलब्ध करा दिया जाये तो वे इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे ।

गुरुकुल शिक्षा को पुनःप्रतिष्ठित करने की दिशा में प्रथम चरण के रूप में वर्तमान में चल रहे गुरुकुलों का संकलन किया जा रहा है । संचालक एकत्रित आयेंगे तो एक-दूसरे के अनुभवों, कठिनाइयों एवं प्रयोगों से शिक्षा ले सकेंगे । संगठित प्रयास से समाज में भी समुचित मान्यता मिलना संभव हो पायेगा । गुरुकुल शिक्षा शासननिरपेक्ष व समाजपोषित होती है किन्तु वर्तमान व्यवस्था में शासन महा-नियंत्रक की भूमिका में रहता है । सभी गुरुकुल संचालकों के संगठित होने से समाज जागरण द्वारा गुरुकुलों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्वायत्तता संरक्षित की जा सकेगी ।

सम्मेलन का स्वरुप

सहभाग	:	गुरुकुलों के आचार्य तथा व्यवस्थापक संत समाज, शिक्षाविद, कुलपति, संस्थाचालक, सामाजिक कार्यकर्ता
28 अप्रैल 2018	:	उद्घाटन समारोह
29-30 अप्रैल 2018	:	विभिन्न गुरुकुलों की प्रस्तुतियाँ भविष्य की कार्ययोजना गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर चर्चा

भारतीय शिक्षण मंडल परिचय

भारतीय शिक्षण मंडल शिक्षा में पुनः भारतीयता प्रतिष्ठित करने में कार्यरत एक अखिल भारतीय संगठन है । शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम एवं पद्धति तीनों भारतीय मूल्यों पर आधारित, भारत केन्द्रित तथा भारत हित की हो, इस दृष्टि से संगठन वैचारिक, शैक्षिक और व्यावहारिक गतिविधियों का नियमित आयोजन करता है । इस निमित्त मंडल ने अनुसंधान, प्रबोधन, प्रशिक्षण, प्रकाशन तथा इन सभी के लिए संगठन ऐसी एक पञ्च आयामी कार्यप्रणाली विकसित की है -

1. अनुसंधान – सभी विषयों में भारतीय ज्ञानपरंपरा तथा भारतीय विचारदृष्टि से अनुसंधान को प्रोत्साहित करना । विश्वविद्यालयों में अध्ययन समूहों का गठन करना । भारतीयता पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार करना ।

2. प्रबोधन – संगोष्ठियों, सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से नीति निर्धारकों, शिक्षकों तथा समाज के प्रबुद्ध वर्ग में भारतीय दृष्टि जागृत करना ।

3. प्रशिक्षण – शिक्षक स्वाध्याय, अभिभावक उद्बोधन तथा संस्थाचालक परामर्श आदि संदर्भित कार्यशालाओं का आयोजन करना ।

4. प्रकाशन – मराठी व अंग्रेजी में मासिक, हिंदी में त्रैमासिक का प्रकाशन । हिंदी, असमिया, तेलुगु, गुजराती, कन्नड़ तथा मराठी में विविध पुस्तकें ।

5. संगठन – देश के 24 राज्यों में भारतीय शिक्षण मंडल की इकाइयाँ हैं । शिक्षा में रुचि रखनेवाले सभी लोगों के लिए साप्ताहिक 'मंडल' तथा विषय के विशेषज्ञों के लिए 'अध्ययन समूह' का गठन । आजीवन सदस्यता 1000/- रु. तथा वार्षिक 100/-रु. ।

युवा आयाम– युवाओं में राष्ट्रभक्ति के साथ ही राष्ट्रगौरव का भाव जागृत करने तथा युवाओं की प्रतिभा और उत्साह को राष्ट्र समर्पण हेतु तैयार करने के उद्देश्य से भारतीय शिक्षण मंडल ने युवा आयाम प्रारंभ किया है ।

गुरुकुल प्रकल्प– भारतीय शिक्षण मंडल की मान्यता है कि गुरुकुल व्यवस्था शिक्षा की सनातन और स्थापित व्यवस्था है। वर्तमान में यह पद्धति युगानुकूल होकर भविष्योन्मुखी पद्धति का रुप धारण कर रही है तथा शिक्षा जगत की संपूर्ण समस्याओं और चुनौतियों का सामना करने में सक्षम सिद्ध हो रही है। इसलिए भारतीय शिक्षण मंडल आदर्श गुरुकुल तथा समाजपोषित शिक्षा व्यवस्था स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत है।